गतांक की चीर-फ़ाड़

डॉ. जुगल किशोर गुप्ता

सीमा त्रिखा के निशाने पर ग्रीन फील्ड निवासी!

मज़दूर मोर्चा के 1-7 जुलाई 2018 के अंक में राजनीतिक, प्रशासनिक, सांस्कृतिक व आर्थिक मुद्दों पर अनेक महत्वपूर्ण समाचार प्रकाशित हुए हैं। लोग़ों के लिये बिजली तथा पानी की अहम आवश्यकता है। यदि इनकी आपूर्ति सुचारु व पर्याप्त न हो तो जीवन दूभर हो सकता है और लोग परेशान होकर प्रशासन के विरुद्ध अपना रोष प्रकट करते रहते हैं।

ग्रीन फ़ील्ड के निवासी कई दिनों से बिजली समस्या से परेशान होकर आधी रात को विधायक सीमा त्रिखा के निवास पर अपनी फ़रियाद लेकर पहुंचे तो पुलिस बुलाकर रात में करीब 18 लोगों को हवालात में बंद करवा दिया। जिनमें कुछ बूढे भी शामिल थे। इनमें से कुछ को दवाइयों की भी आवश्यकता थी जिसकी कोई परववाह नहीं की गई। वहां से उनको अगले दिन शाम को जमानत पर साढे सात बजे छोड़ा गया।

'सीमा त्रिखा ने डुबोई लुटिया भाजपा की, डैमेज कंट्रोल में लगे विपुल गोयल', 'विपुल गोयल का ड्रामाई डैमेज कंट्रोल', 'कैसे-कैसे पहुंचे सीमा त्रिखा के द्वारे', 'ग्रीन फ़ील्ड की बिजली समस्या से स्मार्ट सिटी का भद्दा चेहरा सामने' तथा 'असल कॉलोनाइज़र बहुत पहले गुजर चुका है' द्वारा पूरे प्रकरण में भाजपा व जन प्रतिनिधियों का जनता की समस्याओं के प्रति उत्तरदायित्व का असली चेहरा बेनकाब किया गया है।

उत्तराखंड में उत्तरकाशी ज़िले के नौगांव प्राथमिक विद्यालय में कार्यरत 55 वर्ष से ज्यादा उम्र की टीचर उत्तरा बहुगुणा ने मुख्यमंत्री त्रिवेंद्र सिंह रावत के जनता दरबार में अपना दुखड़ा सुनाते हुये कहा कि उसके पति की मौत हो गयी है और वह न तो नौकरी छोड़ सकती है और ना ही छोटे बच्चों को अनाथ छोड़ सकती है तथा 25 साल से दुर्गम इलाके में सेवायें दे रही है।

विधवा शिक्षिका की फ़रियाद पर गौर करने की बजाये मुख्यमंत्री रावत ने पूछा कि नौकरी लेते वक्त क्या लिखकर दिया था तो अध्यापिका ने गुस्से में बोल दिया कि जिंदगी भर बनवास में रहेंगे, ये लिखकर नहीं दिया था। बदले में मुख्यमंत्री ने बहुगुणा को सस्पेंड करने और कस्टडी में लेने का आर्डर दे डाला जिससे 'उत्तराखंड का मुख्यमंत्री त्रिवेंद्र सिंह रावत क्या बला है जो अध्यापिका को निलंबित कर हिरासत में लेने के आदेश दिये' के जरिये भाजपा सरकार की महिलाओं के प्रति दोगली नीति का पर्दाफ़ाश होता है। गौरतलब है कि मुख्यमंत्री की पत्नी 22 वर्ष से देहरादून में शिक्षिका हैं।

आरएसएस व इससे संबंधित सस्थाओं तथा भाजपा के स्वभाव में है कि वे अपने मन्तव्य की पूर्ति के लिये विभिन्न संस्थाओं द्वारा स्थापित नियमों व परम्पराओं की अवहेलना करने में देरी नहीं लगाते जिसका नवीनतम उदाहरण है-गांधी स्मारक निधि व गांधी शांति प्रतिष्ठान के अध्यक्षों की बिना अनुमति के विश्व हिन्दू परिषद द्वारा 24 व 25 जून को दिवसीय बैठक की गई तथा बिना राजघाट प्रशासन से इजाजत लिये राजघाट को भी दो दिन के लिये बंद कर दिया, जिसका 'दिल्ली में गांधी समाधि पर विश्व हिंदू परिषद ने लगाया ताला' में खुलासा किया गया है। इससे इंगित होता है इस पूरे घटनाक्रम में प्रधानमंत्री मोदी की अप्रत्यक्ष सहमति प्राप्त थी।

आरएसएस व भाजपा (पूर्व जनसंघ) की फितरत में है कि जब किसी संकट में हो तो शासकों से माफ़ी मांग लेना और दोहरी नीति अपनाना जिसका पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी द्वारा आपातकाल लगाने के परिप्रेक्ष्य में 'देवरस ने आपातकाल में पत्र लिखकर माफ़ी मांगी थी' में सटीक विश्लेषण किया गया है।

आरएसएस, जनसंघ (वर्तमान भाजपा) तथा संघ परिवार द्वारा आपातकाल थोपने के लिये इंदिरा गांधी व कांग्रेस की कटु आलोचना की गयी तो संघ प्रमुख बाला साहेब देवरस, पूर्व प्रधानमंत्री अटलबिहारी वाजपेयी तथा अन्य कार्यकर्ताओं द्वारा जेल से बाहर आने के लिये इंदिरा गांधी से माफ़ी मांगी गयी और आपाताकाल के लिये उत्तरदायी जिन कांग्रेसी नेताओं की आलोचना की गई उनमें से कुछ के भाजपा में शामिल होने पर उनके साथ सरकार भी बनाई गई।

गौरतलब है कि हिंदुत्ववादी संगठन हिंदू महासभा के संस्थापक और हिंदुत्व के प्रेरणा स्रोत वीडी सावरकर ने भी अंडेमान जेल से रिहा होने के लिये पत्र लिखकर ब्रिटिश प्रशासन से माफ़ी मांगी थी।

प्रत्येक तानाशाह अपने कार्यकलापों के परिणामस्वरूप काल्पनिक खतरों के कारण अपने साये से भी भयभीत रहता है और अपने सुरक्षाकर्मियों व नज़दीकी सहयोगियों से भी अपनी जान का ख़तरा महसूस करता रहता है जिसका प्रधानमंत्री मोदी भी अपवाद नहीं हैं। केन्द्रीय गृह मंत्रालय द्वारा मोदी की सुरक्षा को लेकर सब राज्यों को भेजे गये नवीनतम निर्देशों के संदर्भ में 'एक न एक दिन हर फ़ासीवादी तानाशाह अपने साये से डरेगा' में उचित समीक्षा की गयी है।

भारतीय भक्ति काल के महान संत कबीर दास सर्वोच्च अर्थों में लगातार सेक्युलर बने रहे जिन्होंने मनुष्य और ईश्वर के रिश्ते को जनवादी चश्मे से देखने की कोशिश की परंतु प्रधानमंत्री मोदी ने मगहर में आयोजित कबीर जयंती में शामिल होकर कबीर को धर्म के दृष्टिकोण से देखते हुये कहा कि कबीर, गुरु नानक एवं बाबा गोरखनाथ के मध्य आध्यात्मिक चर्चायें मगहर में हुई थी जिसकी 'प्रधानमंत्री, मुख्यमंत्री कबीर जयंती में शरीक हुये' तथा 'कबीर जयंती के अवसर पर उनकी याद, कबीर के उलट रकीब' में यथोचित टीका-टिप्पणी की गई है।

विशेष ध्यान देने योग्य है कि गोरखनाथ, कबीर व गुरूनानक अलग-अलग शताब्दियों में हुये थे इसलिये उन तीनों का एक साथ आध्यात्मिक चर्चा में शामिल होना असम्भव है। इससे प्रमाणित होता है कि मोदीजी को ऐतिहासिक तथ्यों की कोई जानकारी नहीं है।

प्रधानमंत्री की अप्रत्यक्ष स्वीकृति व सहमति पर गांधी प्रतिष्ठान की बिना अनुमति के वहां विश्व हिन्दू परिषद का दो दिवसीय शिविर लगाने और दो दिन के लिये राजघाट को जनता के दर्शन के लिये बंद करने पर 'अभी तो ताला ही दिखाई दे रहा है...अगली बार गोडसे का स्मारक दिखेगा' तथा मोदी द्वारा विदेशों से काला धन वापिस लाने के वादे पर सत्ता में आने के बाद भी स्विस बैंकों में भारतीयों द्वारा 7000 करोड़ रुपये जमा होने पर 'अब समझ में आया कि किस टेंपल के लिये पैसा जमा किया जा रहा था' कार्टूनों द्वारा मोदी की नीतियों पर उपयुक्त कटाक्ष किया गया है।

मोदी जी की डिग्री वाकई कमाल की है

मोदी एम ए फर्स्ट क्लास थे, बीए थर्ड क्लास थे, बारहवीं फेल थे और आठवी के बाद पढाई छोड़ चुके थे। इसे कहते हैं चमत्कार।

1) भारत में पहला कंप्यूटर आने के पहले ही मोदीजी की डिग्री कंप्यूटर से प्रिंट हुई।

2) जिस फॉन्ट को माइक्रोसॉफ्ट ने 1992 में विकसित किया वो मोदी जी डिग्री में 1979 में प्रयोग हो चुका था।

3) इंटाएर पोलिटिकल साइंस में पूरी दुनिया में सिर्फ मोदी जी को डिग्री मिली हुई है। और उस विश्वविद्यालय के प्रोफेसरों ने भी ये सब्जेक्ट पहली बार सुना है ।

4) संडे को मोदी जी को डिग्री दिलवा दी।

5) मोदी को डिग्री देने के पहले और देने के 10 साल बाद तक बेचारे कर्मचारी हाथ से ही डिग्री लिखते रहे सिर्फ़ मोदी जी की डिग्री प्रिंट करने के लिए सुपर कंप्यूटर मंगवाया गया था।

6) मोदी जी ने अकेले एडमिशन लिया और अकेले ही एग्जाम दिया वो भी इमरजेंसी के टाइम में जब वो भूमिगत थे, शायद देल्ही यूनिवर्सिटी का एक भूमिगत एग्जाम रूम है गुजरात में ।

- साइबर नजर

भगवा तालिबानियों ने धर्मांतरण के नाम पर दलितों को दौड़ा—दौड़ा कर मारा

सुशील मानव की विशेष रिपोर्ट

उत्तर प्रदेश में भगवा तालिबान का आतंक अपने चरम पर है। संविधान और कानून का इनके राज में कोई मतलब ही नहीं है। हो भी कैसे न्यायपालिका, कार्यपालिका, विधायिका और मीडिया लोकतंत्र के सारे स्तम्भों को तो भगवा तालिबान ने बंधक बना रखा है।

उत्तर प्रदेश के प्रतापगढ़ जिले के संग्रामगढ़ थाना के अंतर्गत रायकाशीपुर गांव में 1 जुलाई को दलित ईसाइयों की प्रार्थना सभा पर गाड़ियों में सवार होकर आए करीब दो दर्जन भगवा तालिबानियों ने असलहे समेत हमला कर दिया और वहां मौजूद लोगों को दौड़ा-दौड़ाकर निर्ममता पूर्वक मारा-पीटा।

भगवा गैंग की बर्बरता का आलम ये कि उन्होंने महिलाओं और बच्चों तक को भी नहीं बख्शा। वहां रखी धार्मिक मूर्तियों और दस मोटर साइकिलों को तोड़फोड़ दिया गया। साथ ही भय और आतंक पैदा करने के लिए फायरिंग भी की गई, जिससे चारो ओर दहशत फैल गयी।

भगवा तालिबानियों द्वारा किए गए इस सुनियोजित हमले में घनश्याम, डब्बू गौतम निवासी रायकाशीपुर,अजय गौतम निवासी मोहम्मदपुर सुहाग, राजेश कनवा, सुरेश कुमार,महरानीदीन निवासी सिटकहिया, जियालाल निवासी विजयीमऊ, द्रोपदी निवासी जबलपुर धर्मेंद्र कुमार व प्रियांशी निवासी कर्माइन, प्रकाश निवासी लोकापुर, अर्जुन पटेल निवासी खैरा, पुत्तीलाल, राम संजीवन निवासी सागर रायकाशीपुर, धीरज निवासी रुमतपुर, मुन्नालाल भदशिव समेत बीस लोग गंभीर रूप से जख्मी हो गए।

पीड़ितों का आरोप है कि सूचना के बावजूद पुलिस प्रशासन घटनास्थल पर नहीं पहुँची। पुलिस प्रशासन के गैर जिम्मेदाराना रवैये से नाराज गुस्साये पीड़ित लोग संग्रामपुर थाने पहुँच गये। तब जाकर योगी आदित्यनाथ की निर्लज्ज पुलिस ने रामकुमार गौतम की तहरीर पर रायकाशीपुर निवासी राजेंद्र सिंह, उसके बेटे रोहित सिंह, शिवम पांडेय निवासी मुरैनी, विवेक तिवारी निवासी सरैया नौवड़िया के अलावा 20 अज्ञात लोगो के खिलाफ केस दर्ज किया। हमले में घायल रामकुमार गौतम इस घटना को राजनीति से प्रेरित बता रहे हैं। उनका कहना है कि वो चुनाव में आरोपी के खिलाफ थे, इसीलिये उन्हें जानबूझकर गलत बहाने से निशाना बनाया जा रहा है।

बता दें कि रायकाशीपुर निवासी राम कुमार गौतम की ओर से अपने घर पर ही अक्सर प्रार्थना सभाएं आयोजित की जाती हैं। जहाँ यीशू दरबार भी लगता रहा है। सोमवार को भी ऐसी ही एक प्रार्थना सभा का आयोजन किया गया था। यही कोई दोपहर का समय था और वहां काफी संख्या में लोग प्रार्थना के लिए जुटे थे, यीशू भजन और कीर्तन किया जा रहा था। राम कुमार गौतम के घर पर सभी लोग यीशू कीर्तन पर और प्रार्थना में लीन थे। इसी दौरान चार गाड़ियों में भरकर करीब दो दर्जन असलहाधारी अचानक वहां आ धमके और वहां मौजूद लोगों को लाठी-डंडों से पीटना शुरू कर दिया।

दूसरी ओर जैसा कि हर घटना और हमला के बाद हिंदुत्ववादी भगवा गैंग धर्मांतरण का आरोप लगाता रहा है यहाँ भी कह रहा है कि प्रार्थना (चंगाई सभा) के बहाने लोगों का धर्म परिवर्तन कराया जा रहा था। दरअसल रायकाशीपुर में रामकुमार गौतम के घर पर यह चंगाई सभा कोई नई बात नहीं थी। करीब दो साल से उनके घर यीशू दरबार लगना शुरू हुआ और फिर इसमें शामिल होने वाले लोगो की संख्या धीरे-धीरे बढ़ती चली गयी।

अगर धर्मांतरण हो भी रहा हो तो क्या उससे निपटने के लिए देश में पुलिस प्रशासन और कानून नहीं है। पुलिस में सूचना देने के बजाय भगवा तालिबानियों ने दलित समुदाय के लोगों पर हमला क्यों किया? भगवा आतंकियों के पास इतनी अधिक मात्रा में गैरलाइसेंसी हथियार असलहे कहाँ से आये? क्या इसे किसी कट्टर हिंदू संगठन द्वारा इन्हें मुहैया करवाया गया था?

दूसरा बड़ा सवाल ये कि सूचना के बावजूद पुलिस घटनास्थल तक क्यों नहीं पहुँची,जबकि पीड़ित खुद थाने पहुंच गये। क्या पुलिस की जानकारी में उनकी मिलीभगत से भगवा अपराधियों द्वारा इस घटना को अंजाम दिया गया?

क्या अब संविधान के अनुच्छेद 25-28 धर्म की स्वतंत्रता का अधिकार का देश में कोई अर्थ नहीं रह गया है? क्या अब देश का कानून भगवा गैंग की लाठी से चलेगा? क्या अब लोगो को वही सब करना होगा जो ये भगवा तालिबानी चाहेंगे?

हीरों की लूट के .....

पेज एक का शेष

बनाया ताकि फ़िल्लोर डकैती के मुद्दई भावेश पर गिरफ़्तारी का दबाव डाल कर, मोहित व उसके साथियों को हीरा डकैती केस से बरी करा लिया जाये। इस रिपोर्ट के बाद यह झूठा मुकदमा खारिज हुआ।

स्पष्ट है कि हीरा कम्पनी के पास वर्षों तक विभिन्न अदालतों में पैरवी करने और महंगे वकील खड़े करने की हैसियत थी। उनके पास राजनीतिक प्रभाव को काटने के लिये अपने प्यादे भी थे। संक्षेप में कह सकते हैं कि वे न्याय को खरीद सकने में सक्षम थे। इसलिये आज उन्हें, बेशक वर्षों गुजरने के बाद, न्याय मिल सका। हालांकि, अभी हाई कोर्ट व सुप्रीम कोर्ट में लम्बी लड़ाई होनी बाकी है। उजाले को अंधेरा बनाने वाले पुलिस कर्मियों की चाल ज्यों की त्यों ही रहनी है।

प्रतियोगी ज्ञान - प्रवेश सेमिनार

किनके लिए- लोक सेवा आयोग प्रतियोगी ज्ञान और रिसर्च कौशल के प्रति गंभीर अभ्यर्थी- प्लस 2, ग्रेजुएट, पोस्ट-ग्रेजुएट, रिसर्च स्कॉलर- पहले आओ, पहले पाओ के आधार पर 20-20 के दो बैच, यानी कुल 40 अभ्यर्थियों के लिए।

वक्ता- वीएन राय, पूर्व आईपीएस

कब - रविवार 15 जुलाई, 2018; दो बैच-10 am–2 pm और 3 pm–6 pm

कहाँ - सचेत, 467, सेक्टर-9, फरीदाबाद

संपर्क-सेमिनार में प्रवेश पाने के लिए 12 जुलाई तक संपर्क करें-**विवेक, 9873134467**.

इस सेमिनार के आधार पर प्रतियोगी ज्ञान और रिसर्च कौशल की नींव मजबूत करने वाली 'सचेत वर्कशॉप' के लिए रजिस्ट्रेशन हो सकेगा।

SACHET workshop is designed to enable the participants optimise their knowledge distillation, skill organisation and awareness quest- the essentials to compete successfully. It is a one-week creative journey carried through well- crafted SWOT (strength, weakness, opportunity, threat) sessions, harnessing, augmenting and customising through concept linked approach, journaling skills, reading habit and survey opportunity.

Participants will experience a unique integrated exposure in capacity building, academic orientation and socio-cultural sensitisation. This contrasts with the prevailing study practices of cramming and retention which often keep the aspirant uncertain. In nutshell it will be a profile transformation into a self- confidant exploit your potential scenario. Each working day will normally comprise two facilitative sessions of 3 hours each, and additional own work sessions.

SACHET involves the following areas in particular –

S – Sanskriti & Scientific temper

A – Art & Attitude

C – Constitution & Community

H – History & Heritage

E – Environment & Economics

T – Time management & Transparency

घर बैठे प्राप्त करें मज़दूर मोर्चा

आज ही अपने हॉकर से कहें कोई दिक्कत हो तो शर्मा न्यूज एजेंसी से फोन नं 9811159238 पर बात करें। बल्लभगढ के पाठक अरोडा न्यूज एजेंसी से 9811477204 पर बात करें:

अन्य बिक्री केन्द्र :

1. **आनंद मैगजीन सैंटर केसी रोड, एनएच-5**
2. **प्रिंट फोर्ट, टेलीफोन एक्सचेंज के सामने नेहरू ग्राउंड**
3. **रेलवे बुक स्टाल ओल्ड रेलवे स्टेशन**
4. **5 ई-18 नरेन्द्र बुक सेन्टर - 9810229192**
5. **एनआईटी रेलवे स्टेशन के बाहर बाटा चौक पुल के नीचे**
6. **राम खिलावन बल्लबगढ़ बस अड्डा पुलिस चौकी के सामने**
7. **हितेश ग्रोवर सैक्टर 29 पेट्रोल पम्प के पास**
8. **जितेन्द्र, बाटा सैंटर - 9971064207**
9. **सिंगला मेडिकल स्टोर, जवाहर कॉलोनी, डिस्पोजल चौक**
10. **आरसीएम स्टोर, बाबा बालकनाथ मंदिर वाली गली, जवाहर कालोनी, फ़रीदाबाद**